Introduction

:: १ ::

:: प्राक्कथन ::

हमारे यहाँ कहा गया है - ''काव्य शास्त्र विनोदेन कालोगच्छति धीमताम् ।'' अर्थात् काव्य और शास्त्र द्वारा प्राप्त विनोद या आनंद में यह जीवन सुरुचिपूर्ण ढंग से व्यतीत हो जाता है । शास्त्रज्ञान की परिगणना काव्य हेतुओं में होती है । प्रतिभा के बाद व्युत्पत्ति को काव्य का हेतु माना गया है । व्युत्पत्ति के अंतर्गत काव्येतर सभी प्रकार के शास्त्रों को अंतर्निर्हित कर लिया जाता है । यहाँ यह स्पष्ट कर देना अत्यावश्यक है कि भारतीय परंपरा में काव्य और साहित्य एक दूसरे के पर्यायवाची है । जिस कवि या साहित्यकार का शास्त्रज्ञान विपुल और समृद्ध होगा उसके काव्य में उतनी अधिक प्रौढता दृष्टिगत होगी । गोस्वामी तुलसीदास विरचित 'रामचरित मानस' भारतीय जनता, विशेषत: उत्तर भारतीय जनता के, कंठ का शृंगार इसीलिए तो है कि वह 'नाना पुराण निगमागम सम्मत' है । अत: सुसंस्कृत एवं सुशिक्षित व्यक्ति के लिए साहित्य और शास्त्र उभय का ज्ञान आवश्यक है । जिन्होंने इन दोनों का अध्ययन किया है उनका भाग्य तो सर्वोपरि है । जिन्होंने शास्त्र नहीं पढ़ा, केवल साहित्य पढ़ा है वे थोड़े कम भाग्यशाली है । किन्तु जिन्होंने शास्त्र पढ़ा है पर साहित्य नहीं पढ़ा उनका भाग्य तो मंदातिमंद है । इस अर्थ में मैं स्वयं को भाग्यशाली समझती हूँ, क्योंकि प्रारंभ से ही साहित्य के पठन-पाठन में मेरी विशेष अभिरूचि रही है । प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के वर्षों में अन्य शास्त्रगामी विषयों की तुलना में भाषा साहित्य के विषयों में मेरी रूझान कुछ अधिक थी । गुजराती, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी पढ़ने में विशेष आनंदानुभूति होती थी । अत: हाईस्कूल के उपरान्त उच्चतर शिक्षा हेतु मैंने कला या विनयन में प्रवेश लेना ही अधिक उचित समझा । भाषा साहित्य के विषयों में भी मेरी अभिरूचि हिन्दी साहित्य के प्रति कुछ अधिक थी । अत: बी.ए. तथा एम.ए. में मुख्य विषय के रूप में मैंने हिन्दी का ही वरण किया था । उसमें भी कथा साहित्य की ओर शुरू से ही लगाव था । चित्रलेखा तथा दिव्या जैसे उपन्यासों के कारण उपन्यास साहित्य की ओर मेरा ध्यान गया और प्रेमचंन्द, जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, रेणु, कमलेश्वर,

प्रभृति उपन्यासकारों के कतिपय उपन्यासों को मैंने शौकिया तौर पर पढ़ा । बी.ए. और एम.ए. ये दोनों उपाधियाँ मेंने उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी से हाँसिल की है । सन् 1994 में मेरा विवाह हुआ और मैं बड़ौदा आ गई । विवाह के उपरान्त मेरे मन में आगे पढ़ने और बढ़ने की विशेष लगन थी । मैंने अपनी यह ईच्छा उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी के हिन्दी के वरिष्ठ प्राध्यापक और मेरे आदरणीय गुरू डॉ. हरीश शुक्ल के सम्मुख प्रस्तुत की । उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करते हुए सुझाया कि मैं बड़ौदा में महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग से पी-एच.डी. हेतु अनुसंधान कार्य कर सकती हूँ । उन्होंने हिन्दी विभाग के दो-तीन वरिष्ठ प्राध्यापकों के नाम सुझाए । यह सन् 1998 की बात है । उस समय डॉ. पारूकान्त देसाई हिन्दी विभाग के अंतर्गत प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के रूप में थे । महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय में पी-एच.डी. पंजीयन में जो नियम है उनके कारण वे मुझे अपने अंतर्गत नहीं रख़ सकते थे। अत: उन्होंने अपने विभाग के दो-तीन वरिष्ठ पी-एच.डी. मार्गदर्शकों के नाम सुचित किए। इसी उपक्रम में मैं डॉ. भगवानदास कहार साहब से परिचित हुई । उन्होंने हिन्दी की सर्वोच्च उपाधि, डी.लीट की उपाधि प्राप्त की है । अत: मैंने निर्धार किया कि उनके मार्गदर्शन में ही मैं अपना अनुसंधान कार्य करुँगी । अत: मैं उन्हें तीन-चार बार इस संदर्भ में मिली और शोध अनुसंधान की अपनी इच्छा उनके सम्मुख रखीं । डॉ. हरीश शुक्ल साहब का हवाला भी दिया । अन्तत: वे उनके अंतर्गत मेरे पंजीकरण के लिए राजी हुए । विषयचयन हेतु और तीन-चार बार उनसे भेंट की । हाईस्कूल के दिनों में मनोविज्ञान भी मेरा एक विषय था और उपन्यास साहित्य के प्रति एक विशेष आकर्षण तो था ही अत: डॉ. साहब ने मुझे उपन्यास और मनोविज्ञान के संदर्भ में शोध अनुसंधान करने का सुझाव दिया और खूब सोच-विचार, चिंतन-मनन के पश्चात् यह विषय प्रस्तावित किया - ''हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक क्षण, ग्रंथियों, समस्याओं एवं कामकुंठाओं का चित्रण ।''

शोधविषय के निश्चित हो जाने पर उन्होंने मुझे शोधप्रक्रिया और शोध प्रविधि

के संदर्भ में उचित मार्गदर्शन दिया । शोध प्रबंध के विभिन्न अंगो, जैसे प्राक्कथन, संदर्भानुक्रम, सहायक ग्रंथ सूचि (Bibliography) आदि के विषय में उदाहरण सहित विशद् चर्चा करते हुए प्रबन्ध में उनकी उपादेयता के संदर्भ में मुझे सही समझ और जानकारी प्रदान की । पाद-टिप्पणी या संदर्भ किस तरह संकेतित करते हैं उसकी विधि के संदर्भ में बताया । उसके पश्चात् कुछ प्रकाशित शोध प्रबन्धों को सामने रखकर उक्त विषय की जानकारी दी । ऐसे शोध प्रबन्धों में डॉ. भारत भूषण अग्रवाल का शोध प्रबन्ध ''हिन्दी उपन्यासों पर पाश्चात्य प्रभाव'', डॉ. एस.एन. गणेशन का शोध प्रबन्ध ''हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन'', डॉ. किशोरसिंह का शोध प्रबन्ध ''हिन्दी उपन्यास में व्यंग्य'', डॉ. धनराज मांधे का शोध प्रबन्ध ''हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास'' प्रभृति का में विशेषत: उल्लेख करना चाहूँगी । इनके अतिरिक्त शोधप्रक्रि या तथा शोध अनुसंधान के संदर्भ में डॉ. नगेन्द्र, डॉ. उदयभानुसिंह, डॉ. रवीन्द्रसिंह श्रीवास्तव, डॉ. राजुरकर, म.म. पंडित के.का. शास्त्री आदि विद्वानों के एतद विषयक ग्रंथों को देख जाने का परामर्श उन्होंने दिया । इतना ही नहीं उन ग्रंथों को उपलब्ध कराने में भी मेरी पर्याप्त सहायता की ।

इतनी पूर्व तैयारी के पश्चात् उक्त विषय को लेकर मेरे नाम का पंजीकरण दिनांक २३.८.९९ को हो गया । उसके बाद सामग्री संचयन, अध्ययन, अनुशीलन, विश्लेषण की प्रक्रिया का प्रारंभ हुआ । जैसे-जैसे मैं इस दिशा में अग्रसरित होती गई वैसे-वैसे अनुसंधान और अध्ययन के नये क्षितिज उदघाटित होते गये । अध्ययन की सुविधा तथा शोध प्रबन्ध की सुनिश्चित नियोजना हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को मैंने निम्न लिखित सात अध्यायों में विभक्त किया है :-

१) विषय प्रवेश

२) मनोवैज्ञानिक उपन्यास : सैद्धान्तिक निरुपण ।

३) हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक क्षणों का निरुपण ।

४) हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनौवैज्ञानिक ग्रंथियों का निरुपण ।

५) हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निरुपण ।

६) हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक काम-कुंठाओं का निरुपण ।

७) उपसंहार ।

प्रथम अध्याय 'विषय प्रवेश' का है । इसमें उपन्यास शब्द की व्याख्या, पश्चिम में उपन्यास का विकास, पश्चिम में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का सूत्रपात, हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव और विकास जैसे मुद्दों का आकलन करते हुए हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम में प्रेमचंद पूर्वकालीन, प्रेमचंद कालीन तथा प्रेमचन्दोत्तर कालीन औपन्यासिक प्रवृत्तियों का ब्यौरा दिया गया है । प्रेमचंदोत्तर कालीन औपन्यासिक प्रवृत्तियों का विस्तृत विवेचन करते हुए उसमें सामाजिक उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, मनोवैज्ञानिक उपन्यास, समाजवादी उपन्यास, आँचलिक उपन्यास, राजनीतिक उपन्यास, व्यंग्यात्मक उपन्यास, पौराणिक उपन्यास, साठोत्तरी उपन्यास, तथा समकालीन उपन्यास जैसी लगभग ग्यारह औपन्यासिक प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन करवाया गया है । इन औपन्यासिक प्रवृत्तियों की विशद् और व्यतिरेकी चर्चा के उपरांत मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के रूपबन्ध को स्पष्ट करने का उपक्रम रखा गया है । यहाँ मनोवैज्ञानिक उपन्यासों को परिभाषित करते हुए उसके प्रमुख आयामों को रेखांकित किया गया है । मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की संरचना को स्पष्ट करते हुए मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की सृष्टि के कारणों की तार्किक और अनुसंधानपरक विवेचना की गई है । मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के निर्माण में वैयक्तिक यथार्थ की पहचान, मनोवैज्ञानिक अनुसंधान, नारी व्यक्तित्व की पहचान, पुरुष का आहत अभिमान, अति बौद्धिकता, नगरीकरण की प्रक्रिया, भौतिकता की अंधीदौड़, पारिवारिक विघटन जैसे कारणों की यहाँ विशेषत: चर्चा हुई है । अध्याय के अंत में उन मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का विशेषत: उल्लेख किया गया है, जिनको इस प्रबन्ध में आधारभूत या उपजीव्य उपन्यासों के रूप में अंगीकृत किया गया है ।

दूसरे अध्याय में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के सैद्धांतिक पक्ष को रखा गया है । यहाँ पर मनोवैज्ञानिक क्षण, Id(इद), ego(इगो), मनोवैज्ञानिक ग्रंथियाँ, लघुता ग्रंथि, लघुता ग्रंथि के कारण प्रभुत्व ग्रंथि, बद्धत्व ग्रंथि, इडीपस और इलेक्ट्रा कोम्प्लेक्स, सादवादी ग्रंथि, माशोकवादी ग्रंथि, सेक्स्युअल परवर्जन की ग्रंथि, फ्रीजीडीटी कोम्प्लेक्स, निम्फोमेनिया, फोबीया कोम्प्लेक्स, आदि मनोवैज्ञानिक संकल्पनाओं को औपन्यासिक उदाहरणों के साथ समझाया गया है । इसी अध्याय के अंतर्गत मनोवैज्ञानिक समस्याओं को परिभाषित करने की चेष्टा हुई है । मनोवैज्ञानिक समस्याओं के अंतर्गत शिशु-मनोविज्ञान की समस्या, पति-पत्नी के बीच तनाव की समस्या, काम (Sex) की समस्या, अहम् (ego) की समस्या, भय की समस्या जैसी विभिन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं की चर्चा औपन्यासिक उदाहरणों के साथ की गई है । प्रस्तुत प्रबन्ध में मनोवैज्ञानिक क्षण, ग्रंथियों और समस्याओं के अतिरिक्त काम-कुंठाओं को भी विशेषत: विश्लेषित करने का उपक्रम है । अत: प्रस्तुत अध्याय में ही कामजनित कुंठाओं को भी विश्लेषित किया गया है । कामजनिक कुंठाओं के अंतर्गत अप्राकृतिक काम-वृत्तियाँ, कामेच्छा की विपुलता, समलैंगिक काम भावना, गुदामार्गीय मैथुन, पशु मैथुन, मुख मैथुन, हस्त मैथुन, पीड़ा द्वारा काम संतुष्टि, Transvatism आदि कामजनित कुंठाओं को विश्लेषित किया गया है ।

तीसरा अध्याय हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक क्षणों के निरुपण के संदर्भ में है । प्रास्ताविक में बहुत संक्षेप में मनोवैज्ञानिक क्षण को परिभाषित किया गया है । तदनन्तर त्यागपत्र, सुनीता, अनामस्वामी, परख, मुक्तिबोध, पानी बीच मीन पियासी, प्रेत और छाया, शेखर एक जीवनी, अपने अपने अज़नबी, नदी के द्वीप, रेखा, डाक बंगला, तीसरा आदमी, अंधेरे बन्द कमरे, मछली मरी हुई, पचपन खंभे लाल दीवारें, सूरजमुखी अंधेरे के, आप का बंटी, कृष्णकली, वे दिन, अनदेखे अनजान पुल, बेघर, आँखों की दहलीज़, चित्तकोबरा, पतझड़ की आवाजें, सीढ़ियाँ, नावें, तत्सम्, बँटता हुआ आदमी, रेत की मछली, कोहरे जैसे लगभग २५-३० मनोवैज्ञानिक

उपन्यासों में निरुपित मनोवैज्ञानिक क्षणों के उदाहरणों को प्रस्तुत किया गया है । बिना कथावस्तु की पृष्ठभूमि के मनोवैज्ञानिक क्षणों को समझाना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव होता है, इसीलिए प्रस्तुत अध्याय में मनोवैज्ञानिक क्षणों के संदर्भ में उनके वस्तु और प्रसंगों को संक्षेप में रखा गया है ।

चतुर्थ अध्याय में उपजीव्य मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों का निरुपण कहाँ-कहाँ और किस-किस तरह से हुआ है उसकी विस्तृत चर्चा उपन्यासों में निरुपित उदाहरणों के साथ की गई है । ऐसी मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों में लघुता ग्रंथि, प्रभुत्व ग्रंथि, बद्धत्व ग्रंथि, इलेक्ट्रा और इडीपस ग्रंथि, सादवादी और माशोकवादी ग्रंथि, फोबिया ग्रंथि, यौन ग्रंथियाँ आदि को उद्‌घाटित किया गया है ।

पंचम अध्याय में स्पष्ट किया गया है कि मानव जीवन में सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक आदि समस्याएँ ही नहीं होती, परंतु मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी होती हैं । यहाँ यह भी ज्ञापित किया गया है कि ये मनोवैज्ञानिक समस्याएँ अन्य प्रकार की समस्याओं से अनुस्युत होती हैं । ये परस्पर संलग्नित होती हैं । अत: प्रस्तुत अध्याय में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन भिन्न-भिन्न परिप्रेक्ष्य में किया गया है, जिन में निम्नलिखित मुख्य है :- वैयक्तिक जीवन के संदर्भ में, पारिवारिक जीवन के संदर्भ में, सामाजिक जीवन के संदर्भ में, आर्थिक पक्ष के संदर्भ में, जैविक स्थिति के संदर्भ में तथा सांस्कृतिक मान्यताओं के संदर्भ में - इन विभिन्न संदर्भों में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का क्या स्वरूप हो सकता है उसका विशद् और सोदाहरण विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत किया गया है । बहुत-सी मनोवैज्ञानिक समस्याओं के मूल में यौन जीवन से जुड़ी हुई घटनाएँ रहती हैं । अत: इसी अध्याय के अंतर्गत ही यौन समस्याओं को भी विश्लेषित किया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में विशेषत: चार मुद्दों की पड़ताल की गई है । इन चार मुद्दों में मनोवैज्ञानिक क्षण, मनोवैज्ञानिक ग्रंथियाँ, मनोवैज्ञानिक समस्याएँ तथा काम-कुंठाओं

के चित्रण को समाविष्ट किया गया है । अत: छठ्ठे अध्याय में जिन कामजनित कुंठाओं के चित्रण को सादाहरण विश्लेति करने का उपक्रम रहा है । प्रस्तुत अध्यायमें जिन कामजनित कुंठाओं को लिया गया है । उनका उल्लेख द्वितीय अध्याय के सैद्धांतिक निरुपण में किया गया है । अत: यहाँ उनका पुनरावर्तन करना उपयुक्त न होगा । द्वितीय अध्याय में उसके सिद्धांत पक्ष को संक्षेप में रखा गया है । यहाँ उन कामजनित कुंठाओं का विश्लेषण विभिन्न उपन्यासों में वर्णित प्रसंगों के आधार पर हुआ है ।

सप्तम् अध्याय उपसंहार का है । इसमें प्रबन्ध के समग्रावलोकन से विश्लेषण के आधार पर कुछ निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है । संक्षेप में समग्र शोध प्रबन्ध के सार संक्षेप या निचोड़ को प्रस्तुत करने का यहाँ उपक्रम रहा है । यहाँ प्रबन्ध की उपादेयता और उपलब्धियों को भी समेकित किया गया है । इसके साथ ही उसकी भविष्यत्: संभावनाओं को उकेरा गया है ।

प्रत्येक अध्याय के अंत में यथा-संभव निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है । अध्ययन की सुविधा हेतु शोध प्रबन्ध में अलग-अलग उपशीर्षकों या मुद्दों के लिए युनिटों को निर्देशित किया गया है । शोध प्रबन्ध के अंत में संदर्भिका या ग्रंथानुक्रमणिका (Bibliography) को प्रस्तुत किया गया है । इस खंड को चार परिशिष्टों में विभक्त किया गया है । प्रथम परिशिष्ट में उपजीव्य ग्रंथों की सूची, द्वितीय परिशिष्ट में हिन्दी के सहायक ग्रंथो की सूची, तृतीय परिशिष्ट में अंग्रेजी के सहायक ग्रंथों की सूची तथा अंतिम और चतुर्थ परिशिष्ट में पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख किया गया है । इन सभी के अकारादि क्रम (Alphabetic Order) का निर्वाह हुआ है ।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में माता-पिता का स्थान शीर्षस्थ होता है । मेरे इस अध्ययन-अध्यवसाय के पीछे मेरे माता-पिता की प्रेरणा और संस्कारों की भूमिका का सविशेष महत्व है । अत: सर्व प्रथम उनके चरणों में अपने प्रणाम निवेदित करती हूँ । नारी या स्त्री को 'द्विज' कहा गया है । विवाह के उपरान्त उसका दूसरा जन्म होता है ।

मेरे सास-ससुर भी मेरे माता-पिता तुल्य है । उनके आशीर्वादों से ही मैं अध्ययानि हुई हूँ । अत: उनको मैं हृदय से प्रणाम करती हूँ ।

हमारी परंपरा में गुरू का महत्व भी अपरिहार्य होता है । शोध अनुसंधान के कार्य में मार्गदर्शक वही गुरू माना जाता है। मेरे मार्गदर्शक डॉ. भगवानदास कहार की मुझ पर विशेष कृपा रही है । उन्होंने कदम-कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया है । और इस महती कार्य में मुझे प्रोत्साहित किया है । गुरू के ऋण से कोई भी व्यक्ति उऋण नहीं हो सकता है । अत: मैं सदैव उनकी ऋणी रहूँगी ।

मेरे इस कार्य में सबसे बड़ा योगदान मेरे पति श्री केतनभाई का रहा है । अनेक कष्टों को सहते हुए भी उन्होंने सदैव मेरा साथ दिया है । इस पूरे कार्यकाल में हमारे पुत्र रुचित को उन्होंने जिस तरह संभाला है और जिस तरह से मुझे प्रोत्साहित किया है उसका स्मरण मेरे लिए स्मृतिप्राथेय ही रहेगा ।

शोध अनुसंधान के इस सुदीर्घ कार्य में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष तथा प्रोफेसर डॉ. पारुकान्त देसाई का मुझे सविशेष सहयोग मिला है । डॉ. साहब का शोध अनुसंधान का क्षेत्र ही उपन्यास है । अत: कई स्थानों पर उन्होंने मुझे सलाह सूचन दिए हैं । अत: उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ । यहाँ हिन्दी विभाग के अन्य वरिष्ठ अध्यापकों के प्रति भी मैं अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करती हूँ । इन में प्रोफे सर गोस्वामी साहब, डॉ. प्रेमलता बाफ ना, डॉ. अनुराधा दलाल, डॉ. अहीरे आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है । उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी के वरिष्ठ अध्यापकों में डॉ. हरीश शुक्ल, डॉ. आर.पी. शाह तथा आर.एम. उपाध्याय साहब के प्रति भी मैं अपनी श्रद्धा व्यक्त करती हूँ, क्योंकि उनकी प्रेरणा से ही मैं एम.ए. तक की शिक्षा संपन्न कर सकी हूँ । अत: यहाँ उनके प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना धर्म समझती हूँ ।

अपनी बुद्धि-मति तथा सामर्थ्य की सीमाओं से मैं भलीभाँति परिचित हूँ । अपनी तरफ से मैंने हर संभव प्रयत्न किया है कि इस कार्य को संपूर्णता और त्रुटिहीनता से

सम्पन्न करूँ। परन्तु मनुष्य तो मनुष्य ही है । कहीं न कहीं त्रुटि-दोष तो रह ही जाता है । अत: ऐसी त्रुटियों के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ । मेरा यह कार्य शोध-अनुसंधान और विद्या के क्षेत्र में यदि किंचित् भी वृद्धि करता है तो मैं स्वयं को कृतार्थ समझूँगी ।

अंत में बेर्टोल्ट ब्रेष्ट की पंक्तियों को उद्धृत करने का मोह-संवरण नहीं कर पाती हूँ -

हर चीज़ बदलती है ।
अपनी हर आखिरी साँस के साथ
तुम एक ताज़ा शुरूआत कर सकते हो ।

विनीत,

दिनांक : 17·08·2002.

Thakkar Manisha K.
ठक्कर मनीषा केतनकुमार